B. A. History. Hon's Part: II
Paper: III, Unit:- II, Date: 12.11.2020 Lecture No:- 17

Lession: कबीर

कबीर निर्गुण भक्ति के महान उद्गाता और गुरु थे जिनकी 'वाणी' या दोहे भक्ति आन्दोलन के अन्य पंथों के प्रवर्तकों या गुरु आचार्यों से आज भी कहीं अधिक लोक प्रिय है। हलांकि कबीर के आराध्य देव राम थे, किन्तु कबीर का राम निर्गुण, निराकार परब्रह्म परमेश्वर है जो कहीं मन्दिर में नहीं, अपितु प्राणी मात्र के हृदय में विराजते हैं। अपनी बातों और 'साखी' का दो टूक भाषा स्पष्टता के साथ प्रगट करना कबीर की विशेषता थी। उनके द्वारा स्थापित पंथ उनके नाम से ही, अर्थात कबीर पंथ के नाम से जाना जाता है। कबीर पंथ का सर्वाधिक लोकप्रियता उत्तर भारत में मिली और अनगिनत स्थानों पर मठों की स्थापना की गई, जिन्हें कबीर चौरा भी कहा जाता है। निःसंदेह कबीर भक्ति आन्दोलन के कालजयी निर्गुण संत थे, जिन्होंने भारत में चले भक्ति आन्दोलन की सभी धाराओं एवं पंथों को प्रभावित किया।

कबीर के जन्म के सम्बन्ध में किंवदन्ती प्रचलित है कि उनका जन्म एक ब्राह्मण विधवा की कोख से हुआ था, परन्तु उनका पालन-पोषण एक मुस्लिम जुलाहा परिवार में बनारस में हुआ था। दरअसल कबीर ने जिस प्रकार हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों से समान दूरी बनाते हुए उनके व्याप्त बुराइयों पर जमकर प्रहार करते हुए भी उनकी अच्छाइयों को स्पष्ट तौर पर स्वीकार किया, उसके कारण हिन्दू और ~~मुसल~~ मुस्लिम समाज के निम्न स्तरों के लोगों ने समान रूप से उन्हें अंगीकार किया। इसलिए उनके जन्म और मृत्यु के सम्बन्ध में ऐसी किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं, जो उन्हें एक साथ हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मों से जोड़ती है। लेकिन सच तो है कि उनका पथ तो धार्मिक झगड़ों से दूर ऐसा रास्ता था, जिसपर चलते हुए काँटे चुभने के अलावा कष्ट भी होता था, लेकिन ब्रह्मानन्द की प्राप्ति भी होती थी, परम मुक्ति की मंजिल मिलती थी।

कबीर हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों, पूजा-पाठ, पुरोहितों के आडम्बर एवं पाखंड, मूर्ति पूजा, जातीय भेद-भाव, छुआछूत आदि के साथ-साथ मुसलमानों के नमाज, अजान या अन्य धार्मिक आडम्बर एवं पाखंडों का एक साथ विरोध करते थे। मध्यकालीन धार्मिक सर्वोपिता के युग में उन्होंने धार्मिक आडम्बरों, पाखंडों और कुप्रथाओं एवं कुरीतियों पर जोरदार प्रहार किया और किसी भी सीमा तक त्याग तथा बलिदान के लिए कबीर ने अपने अनुयायियों का आह्वान किया —

कबीरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जारे आपना, चले हमारे साथ॥

कबीर पर भक्ति आन्दोलन के गुरुओं और पंथों का प्रभाव था, किन्तु वे किसी से बँधे नहीं थे। अपने प्रथम गुरु वैष्णव धर्म के प्रसिद्ध आचार्य रामानन्द से उन्होंने 'राम' को ग्रहण किया, किन्तु राम के सगुण रूप को नहीं माना। इसी प्रकार नाथ पंथियों और बौद्ध सिद्धाचार्यों के विचार साधना तत्व को छोड़कर निराकार ईश्वर के तत्व को ग्रहण किया। दरअसल वे धार्मिक वितंडा, कर्म काण्ड और साधना मार्गों के कटु आलोचक थे। इसीलिए उन्होंने सभी प्रकार की सामाजिक-धार्मिक बुराइयों पर तीव्र प्रहार किया। ईश्वर से भी ऊँचा गुरु को स्थान देकर उन्होंने निर्गुण भक्ति की निर्मल धारा प्रवाहित की, जिससे उत्तर भारत की शूद्र जातियाँ आलोकित हो गई। वास्तव में कबीर ने जीवन के कटु यथार्थ से लोगों को अवगत कराया, जिनका कबीर को मानने और नहीं माननेवाले दोनों प्रकार के लोगों पर समान प्रभाव पड़ा। आज भी व्यवहारिक जीवन में जीवन के यथार्थ से रूबरू कराने के लिए कबीर के दोहे को उद्धृत किया जाता है।

कबीर के विचारों में कई विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं,

उदाहरणस्वरूप वे 'राम' के नाम ~~कई कि संतालियाँ भी पायी जाती हैं।~~ जप पर ज़ोर देते थे, परन्तु राम को निराकार निर्गुण मानते थे लेकिन कहीं कहीं उसी राम को सगुण भी मान लेते थे। इसी प्रकार उन्होंने 'माया' के आलिंगन को स्वीकार कर सगुण भक्ति के लोगों और समुदायों के उद्धारक थे, जो निर्गुण भक्ति की सूखी धारा से भक्ति का रस पाने में अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं बौद्धिक विपन्नता के कारण असमर्थ थे। इसीलिए कबीर ने न केवल निर्गुण, निराकार ब्रह्म को 'राम' का नाम देकर जप का संदेश दिया, अपितु ऐसे नैतिक व्यवहारिक कथनों को प्रसारित किया, जिन्हें हिन्दू या मुस्लिम धर्म के कट्टरपंथी भी काट नहीं सकते थे।

मध्यकाल के निर्गुण भक्ति आन्दोलन पर कबीर का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा। बाद के समाज के निम्न वर्गीय समुदायों और उनके गुरु आचार्यों ने कबीर को अपना गुरु माना। रविदास, धन्ना, दादू, सेन और पीपा ~~उन्होंने~~ जैसे निर्गुण सन्तों के लिए कबीर की वाणी धर्मशास्त्र बन गई। सिक्ख धर्म के प्रवर्तक नानक के 'आदि ग्रन्थ' (शब्द) में कबीर के प्रभाव को स्पष्टतः से देखा जा सकता है। कबीर की लोकप्रियता इतनी बढ़ी की उनके अनुयायी ही नहीं अपितु सामान्य जन भी कबीर के नाम का उपयोग करते हुए दोहों का अम्बार लगा दिया। अतः आज के दिन में यह कहना मुश्किल है कि कबीर के नाम से लोकप्रिय दोहों में कौन मौलिक है, और कौन उनके अनुयायियों या प्रशंसकों द्वारा जोड़े गए हैं। यह शोध का एक अलग विषय है, किन्तु इतना निर्विवाद है कि कबीर की एक संत के रूप में लोकप्रियता सभी सीमाओं को पार करते हुए आज भी बरकरार है।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कालेज, जयनगर,